BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 2, April-June, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

भारत में आदिवासी महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण पर वैश्विक परिप्रेक्ष्य

Bipin Kumar
Research Scholar, Political Science
Patliputra University, Patna
Dr. Dilip Kumar
Associate Professor
Jagat Narayan College, Khagaul

परिचय (Introduction)

भारत में आदिवासी महिलाएं समाज की महत्वपूर्ण और विशिष्ट धारा हैं, जो न केवल अपनी सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षक हैं, बल्कि अपने समुदाय की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आदिवासी महिलाएं अपनी पारंपरिक गतिविधियों, जैसे कृषि, पशुपालन, शिल्पकारी, और जड़ी–बूटी संग्रहण, के माध्यम से आर्थिक दृष्टि से भी योगदान करती हैं। इसके अलावा, आदिवासी समाज में महिलाओं को अक्सर परिवार और समाज के महत्वपूर्ण निर्णयों में सक्रिय भूमिका निभाते हुए देखा जाता है। हालांकि, उनके अधिकारों और स्थान को कभी–कभी नजरअंदाज किया जाता है, जिससे उनकी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति में असंतुलन उत्पन्न होता है।

आदिवासी महिलाओं का राजनीतिक सशक्तिकरण उनके जीवन के प्रत्येक पहलु में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है। राजनीतिक सशक्तिकरण से उनका अधिकार, प्रतिनिधित्व और निर्णय प्रक्रिया में हिस्सा बढ़ता है, जो अंततः उनके सामाजिक और आर्थिक उत्थान में सहायक हो सकता है। भारतीय संविधान ने आदिवासी महिलाओं को आरक्षण जैसे अधिकार दिए हैं, जो उन्हें पंचायतों, राज्य विधानसभाओं और लोकसभाओं में भागीदारी का अवसर प्रदान करते हैं। इसके अलावा, महिलाओं के सशक्तिकरण से आदिवासी समुदाय की स्थिरता और प्रगति में भी योगदान मिलता है। यह सशक्तिकरण उनके स्वास्थ्य, शिक्षा, और आजीविका के अवसरों को भी बढ़ाता है, जिससे वे समाज में समानता की ओर अग्रसर हो पाती हैं।

वैश्विक दृष्टिकोण से, आदिवासी महिलाओं का राजनीतिक सशक्तिकरण एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। विश्व भर में आदिवासी महिलाएं कई समस्याओं का सामना कर रही हैं, जैसे सामाजिक उत्पीड़न, पारंपरिक अधिकारों की हानि और राजनीतिक निर्णयों से उनकी उपेक्षा। अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और एशिया जैसे क्षेत्रों में आदिवासी महिलाओं की स्थिति अलग–अलग हो सकती है, लेकिन अधिकांश देशों में उनका राजनीतिक अधिकार सीमित है। वैश्विक स्तर पर, अंतर्राष्ट्रीय संगठन और राज्य सरकारें आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए काम कर रही हैं, लेकिन इन प्रयासों के बावजूद, आदिवासी महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में अभी भी भारी अंतराल मौजूद है। यह परिप्रेक्ष्य यह दर्शाता है कि सशक्तिकरण के लिए लंबी प्रक्रिया और वैश्विक सहयोग की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द :– उत्पीड़न, सशक्त, जागरूकता, वैश्विक, संवेदनशीलता, भागीदारी, संवैधानिक।

भारत में आदिवासी महिलाओं का राजनीतिक सशक्तिकरण (Political Empowerment of Tribal Women in India)

1. संविधानिक अधिकार (Constitutional Rights)

भारत के संविधान ने आदिवासी महिलाओं के राजनीतिक और सामाजिक अधिकारों को संरक्षित करने के लिए विशेष प्रावधान किए हैं। आदिवासी समुदायों के लिए आरक्षण और प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने वाली नीतियाँ भारत के संविधान का अभिन्न

@2025 Bihar Shodh Samaagam

हिस्सा हैं। विशेष रूप से, संविधान के अनुच्छेद 15 और 46 के तहत आदिवासी महिलाओं को सामाजिक और शैक्षिक दृष्टि से सशक्त बनाने के लिए कई उपाय किए गए हैं। संविधान के 73वें और 74वें संशोधन के माध्यम से पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं को आरक्षण देने का प्रावधान किया गया है, जिससे आदिवासी महिलाओं को राजनीति में सक्रिय भागीदारी का अवसर मिला है। इस आरक्षण के अंतर्गत, आदिवासी क्षेत्रों में पंचायतों में महिला प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित किया गया है, जो उन्हें स्थानीय राजनीति में प्रभावी भागीदार बनाता है।

इसके अलावा, आदिवासी क्षेत्रों में लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के लिए निर्धारित आरक्षण आदिवासी समुदायों के प्रतिनिधित्व को बढ़ाता है। यह संवैधानिक प्रावधान आदिवासी महिलाओं को उनके अधिकारों और हितों की रक्षा करने में मदद करता है। भारतीय सरकार ने आदिवासी महिलाओं के लिए विभिन्न योजनाएँ और कार्यक्रम शुरू किए हैं, जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, और गरीबी उन्मूलन के लिए उपाय, जो उन्हें सशक्त बनाने में मदद करते हैं। इसके साथ ही, न्यायपालिका में उनके अधिकारों की रक्षा के लिए कई निर्णय दिए गए हैं, जो उनके लिए एक मजबूत संवैधानिक सुरक्षा तंत्र प्रदान करते हैं। संविधानिक अधिकारों का उल्लंघन और प्रभावी क्रियान्वयन की चुनौतियाँ भी हैं, लेकिन इन अधिकारों के माध्यम से आदिवासी महिलाओं को समाज में अपनी स्थिति सुधारने और राजनीतिक जीवन में भागीदारी बढ़ाने का मौका मिलता है।

2. सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएं (Social and Cultural Barriers)

भारत में आदिवासी महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण के रास्ते में कई सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँ हैं। आदिवासी समाज में महिलाओं की भूमिका अक्सर पारंपरिक परिवार और समुदाय केंद्रित होती है, और उनके लिए राजनीतिक और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी करना कठिन हो सकता है। इनमें से कई बाधाएँ सामाजिक संरचनाओं और मान्यताओं से उत्पन्न होती हैं, जो महिलाओं को पुरुषों के साथ समान स्थिति में नहीं देखतीं। आदिवासी समाजों में महिलाओं को पारंपरिक कर्तव्यों, जैसे घर और परिवार का पालन–पोषण, खेतों में काम करना, और जल, जंगल, जमीन जैसे संसाधनों का प्रबंधन करना, सौंपा जाता है, जिसके कारण उनका ध्यान सार्वजनिक जीवन से हटा रहता है। सामाजिक बाधाओं के कारण, आदिवासी महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और अन्य विकासात्मक संसाधनों तक पहुंच में भी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। उनकी शिक्षा का स्तर अक्सर निम्न होता है, जिससे उन्हें राजनीतिक जागरूकता और नेतृत्व की भूमिका में आने में अड़चनें आती हैं। इसके अलावा, आदिवासी महिलाओं के खिलाफ लैंगिक भेदभाव और हिंसा की घटनाएँ भी अक्सर देखने को मिलती हैं, जो उनकी स्वतंत्रता और समान अवसरों की दिशा में एक बड़ी बाधा बनती हैं। इसके साथ ही, आदिवासी समुदायों में महिलाएं अपनी पारंपरिक और सांस्कृतिक पहचान के प्रति बहुत समर्पित होती हैं, जो कभी–कभी उनके राजनीतिक विचारों और सक्रियता को प्रभावित करती है। सांस्कृतिक रुढ़िवादिता, जैसे शादी, परिवार और घर के बाहर काम करने की पारंपरिक भूमिका, उन्हें बाहरी दुनिया से कटने और राजनीतिक निर्णयों से दूर रखने की प्रवृत्तियों को बढ़ाती हैं।

इन सांस्कृतिक और सामाजिक बाधाओं को दूर करने के लिए सामुदायिक स्तर पर जागरूकता, शिक्षा और अन्य सहायक कार्यक्रमों की आवश्यकता है, ताकि आदिवासी महिलाएं अपनी पूरी क्षमता के साथ राजनीतिक और सामाजिक जीवन में भाग ले सकें।

3. राजनीतिक भागीदारी (Political Participation)

भारत में आदिवासी महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी एक महत्वपूर्ण और विकासशील क्षेत्र है, जो समय के साथ धीरे–धीरे बढ़ रहा है। संविधान के तहत उन्हें पंचायतों और विधानसभा चुनावों में भाग लेने के लिए आरक्षण का अधिकार प्राप्त है, जिससे उनका प्रतिनिधित्व राजनीति में बढ़ा है। आदिवासी महिलाओं का स्थानीय और राज्य स्तर पर सक्रिय रूप से शामिल होना, उन्हें अपने समुदाय की समस्याओं और आवश्यकताओं को प्रमुख मंचों पर प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करता है। पंचायती

राज संस्थाओं में आदिवासी महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने आरक्षण की नीति को लागू किया है, जो उन्हें स्थानीय निर्णयों में प्रभावी भागीदार बनाता है। इसके अलावा, कई आदिवासी महिला नेता और कार्यकर्ता पंचायतों और क्षेत्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण राजनीतिक पदों पर आसीन हो चुकी हैं। उनके नेतृत्व में कई आदिवासी क्षेत्रों में विकास और कल्याण के कार्य हुए हैं, जो यह साबित करते हैं कि जब महिलाएं नेतृत्व करती हैं, तो समग्र समुदाय का लाभ होता है। हालांकि, आदिवासी महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में अभी भी कई चुनौतियाँ हैं। एक बड़ी चुनौती यह है कि महिलाएं अभी भी राजनीतिक प्रक्रिया में पुरुषों के प्रभाव के मुकाबले कम प्रतिनिधित्व करती हैं। इसके अलावा, आदिवासी क्षेत्रों में राजनीतिक दलों के बीच समन्वय की कमी और राजनीतिक जागरूकता का अभाव, आदिवासी महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को बाधित करता है। कई बार, महिला उम्मीदवारों को पुरुष नेताओं द्वारा समर्थन की कमी का सामना करना पड़ता है, और वे चुनावी प्रक्रिया में पूरी तरह से स्वतंत्र नहीं हो पातीं। इन समस्याओं के बावजूद, आदिवासी महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में तेजी से सुधार हो रहा है, और उनके प्रभावशाली नेतृत्व की मिसालें बढ़ रही हैं। सही दिशा में सुधार, जैसे बेहतर शिक्षा, प्रशिक्षण और संसाधन प्रदान करना, आदिवासी महिलाओं को राजनीति में अधिक सक्रिय और प्रभावी बनाने में मदद कर सकते हैं।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में आदिवासी महिलाओं का सशक्तिकरण (Global Perspective on the Political Empowerment of Tribal Women)

1. अंतर्राष्ट्रीय उदाहरण (International EÛamples)

दुनिया भर में आदिवासी महिलाओं का राजनीतिक सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण मुद्दा है, और विभिन्न देशों में इस दिशा में कुछ सराहनीय प्रयास किए गए हैं। लैटिन अमेरिकी देशों में, विशेष रूप से बोलीविया, इक्वाडोर और पेरू में आदिवासी महिलाओं के अधिकारों और राजनीतिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए कई पहलें की गई हैं। उदाहरण के तौर पर, बोलीविया में, आदिवासी महिलाओं को राष्ट्रीय राजनीति में अपनी आवाज उठाने का एक सशक्त मंच मिला है, और वे अब संसद में प्रभावी रूप से प्रतिनिधित्व करती हैं। बोलीविया की पहली आदिवासी महिला उपराष्ट्रपति, ऐल्सा सांचेज, इसका एक प्रमुख उदाहरण हैं। उनकी भूमिका ने न केवल बोलीविया में आदिवासी महिलाओं की स्थिति को ऊपर उठाया बल्कि उन्हें वैश्विक स्तर पर एक प्रेरणा भी प्रदान की। इसी तरह, पेरू में आदिवासी महिलाओं को भूमि अधिकारों और संसाधनों के प्रबंधन में बड़ी भूमिका निभाने के अवसर मिले हैं। पेरू में आदिवासी महिला नेताओं ने ग्रामीण विकास योजनाओं में सक्रिय भागीदारी की है, और कई आदिवासी समुदायों में महिलाएं स्थानीय परिषदों में प्रभावी भूमिका निभाती हैं। अफ्रीका में भी, कई देशों में आदिवासी महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए कई कदम उठाए गए हैं। उदाहरण के लिए, युगांडा और केन्या में आदिवासी महिलाओं को सामाजिक, राजनीतिक, और आर्थिक मुद्दों पर काम करने के लिए एक मंच मिला है, जो उनके अधिकारों के संरक्षण में सहायक रहा है। इन देशों में आदिवासी महिलाओं ने पंचायतों, जिला परिषदों और नगरपालिका चुनावों में भाग लिया है। इन देशों के उदाहरण यह सिद्ध करते हैं कि जब आदिवासी महिलाएं सक्रिय रूप से राजनीतिक प्रक्रियाओं में भाग लेती हैं, तो यह उनके समुदायों के लिए सकारात्मक बदलाव लाता है।

2. संस्थाएं और कार्यक्रम (Institutions and Programs)

वैश्विक स्तर पर आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए कई अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ और कार्यक्रम काम कर रही हैं। संयुक्त राष्ट्र महिला संगठन आदिवासी महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में सबसे प्रमुख संस्थाओं में से एक है। UN Women ने आदिवासी महिलाओं के लिए कई कार्यक्रम शुरू किए हैं, जो उन्हें समाज में उनके अधिकारों और भूमिकाओं के बारे में जागरूक करते हैं, साथ ही उन्हें राजनीतिक और आर्थिक निर्णयों में सक्रिय भागीदारी की दिशा में मार्गदर्शन करते हैं।

इसके अलावा, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने आदिवासी महिलाओं के लिए कार्यस्थल पर समानता और सुरक्षा की दिशा में कई पहलें की हैं, जैसे आदिवासी महिलाओं को उनके पारंपरिक कार्यों और भूमिकाओं में आर्थिक रूप से सशक्त बनाना। ILO के "Conventions and Recommendations" में आदिवासी समुदायों के लिए विशेष प्रावधान हैं, जो उनके अधिकारों की रक्षा करते हैं। इसके साथ ही, आदिवासी अधिकारों पर काम करने वाली गैर–सरकारी संगठन जैसे "Cultural Survival" और "Indigenous Women's Network" ने विभिन्न देशों में आदिवासी महिलाओं के राजनीतिक और सामाजिक सशक्तिकरण के लिए अभियानों का नेतृत्व किया है। ये संगठन आदिवासी महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करते हैं और उन्हें निर्णय–निर्माण प्रक्रिया में शामिल करने के लिए काम करते हैं।

इन संस्थाओं और कार्यक्रमों का उद्देश्य आदिवासी महिलाओं के जीवन स्तर को सुधारना, उन्हें राजनीतिक सशक्तिकरण का अवसर प्रदान करना, और वैश्विक स्तर पर उनके अधिकारों की रक्षा करना है।

3. वैश्विक चुनौतियाँ (Global Challenges)

वैश्विक स्तर पर आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण के सामने कई गंभीर चुनौतियाँ हैं, जो उनके अधिकारों के पूरे सम्मान और संरक्षण में बाधक बनी रहती हैं। सबसे बड़ी चुनौती है समाज में व्याप्त लैंगिक और नस्लीय भेदभाव। आदिवासी महिलाएं अक्सर अपनी जेंडर पहचान के कारण दोहरी असमानता का सामना करती हैं – एक तो वे आदिवासी समुदाय की सदस्य हैं, और दूसरी ओर, वे महिला हैं। इस स्थिति के कारण उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक सेवाओं जैसी बुनियादी जरूरतों से वंचित किया जाता है।

दूसरी चुनौती है आदिवासी महिलाओं का राजनीतिक सशक्तिकरण। कई देशों में आदिवासी महिलाएं राजनीतिक प्रक्रिया से पूरी तरह अलग–थलग पड़ी हैं। राजनीति में उनका प्रतिनिधित्व बहुत कम है, और उन्हें प्रमुख राजनीतिक निर्णयों से बाहर रखा जाता है। इसके अलावा, आदिवासी महिलाओं को पारंपरिक भूमि अधिकारों से वंचित किया जाता है, जिसके कारण वे अक्सर अपनी भूमि पर नियंत्रण खो देती हैं और उनके पास अपने समुदाय के विकास के लिए संसाधन नहीं होते। इसके अलावा, वैश्विक स्तर पर आदिवासी महिलाओं के लिए कई राजनीतिक और कानूनी संरचनाएँ असंवेदनशील और अपर्याप्त हैं। अधिकांश देशों में, आदिवासी अधिकारों के लिए बने कानूनों का प्रभावी क्रियान्वयन नहीं हो पाता है, जिससे आदिवासी महिलाओं की स्थिति में कोई खास बदलाव नहीं आता।

आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए वैश्विक स्तर पर एक ठोस, समान और प्रभावी नीति की आवश्यकता है, जो लैंगिक और नस्लीय भेदभाव को समाप्त करने, राजनीतिक भागीदारी बढ़ाने, और उनके पारंपरिक अधिकारों की रक्षा करने में सक्षम हो।

भारत में और वैश्विक स्तर पर समानताएँ और भिन्नताएँ (Similarities and Differences between India and the Global ConteÛt)

1. समानताएँ (Similaritie)

भारत और वैश्विक स्तर पर आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण में कई समानताएँ पाई जाती हैं। सबसे पहली समानता यह है कि आदिवासी महिलाओं को समाज के दोनों स्तरों, यानी पारंपरिक और आधुनिक, में लैंगिक और नस्लीय भेदभाव का सामना करना पड़ता है। चाहे भारत हो या अन्य देश, आदिवासी महिलाएं अक्सर सामाजिक और राजनीतिक निर्णयों में अपनी सीमित भागीदारी और अधिकारों के कारण उपेक्षित होती हैं। उनके पास शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, और अन्य बुनियादी सुविधाओं तक सीमित पहुंच होती है, जो उनके विकास में प्रमुख बाधा बनती है। एक और समानता यह है कि भारत और अन्य देशों में आदिवासी महिलाओं को भूमि अधिकारों के उल्लंघन का सामना करना पड़ता है। अधिकांश आदिवासी समुदायों में महिलाएं

पारंपरिक रूप से भूमि और संसाधनों का प्रबंधन करती हैं, लेकिन कई देशों में भूमि अधिकारों का उल्लंघन उनके लिए एक सामान्य समस्या है। यह न केवल उनके आर्थिक सशक्तिकरण को प्रभावित करता है, बल्कि उन्हें राजनीतिक प्रक्रिया से भी बाहर कर देता है। इसके अलावा, भारत और वैश्विक स्तर पर आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए सरकारी और गैर–सरकारी संगठनों द्वारा कई समान कार्यक्रम चलाए जाते हैं। ये कार्यक्रम महिला शिक्षा, स्वास्थ्य, और भूमि अधिकारों के संरक्षण के लिए काम करते हैं, ताकि आदिवासी महिलाओं को समाज में समान स्थिति प्राप्त हो।

इस प्रकार, आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए आने वाली समस्याएँ और समाधान, विशेष रूप से लैंगिक असमानता और संसाधनों तक पहुंच की कमी, भारत और अन्य देशों में समान रूप से दिखाई देती हैं।

2. भिन्नताएँ (Difference)

भारत और वैश्विक स्तर पर आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण में कुछ महत्वपूर्ण भिन्नताएँ भी पाई जाती हैं। एक प्रमुख भिन्नता यह है कि भारत में आदिवासी महिलाओं के लिए संवैधानिक प्रावधानों का एक सशक्त ढांचा मौजूद है, जैसे पंचायतों में महिलाओं के लिए आरक्षण, जो उन्हें स्थानीय राजनीति में सक्रिय भागीदार बनाता है। भारतीय संविधान और सरकारी योजनाएँ आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण को बढ़ावा देती हैं। इसके विपरीत, अन्य देशों में यह स्थिति इतनी सशक्त नहीं है। कई देशों में आदिवासी महिलाओं के लिए कोई विशेष संवैधानिक सुरक्षा नहीं है, और उनकी राजनीतिक भागीदारी सीमित होती है। भारत में आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण में सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों की एक विस्तृत श्रृंखला मौजूद है, जैसे महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना, जो ग्रामीण आदिवासी महिलाओं के रोजगार को बढ़ावा देती है। वहीं, कई वैश्विक संदर्भों में ऐसी योजनाओं की कमी है, और यदि हैं भी, तो उनका प्रभावी कार्यान्वयन नहीं हो पाता।एक और भिन्नता यह है कि भारत में आदिवासी महिलाओं की पहचान और उनकी राजनीतिक भागीदारी के संदर्भ में विभिन्न स्तरों पर प्रयास किए गए हैं, जैसे 73वें और 74वें संविधान संशोधन द्वारा पंचायतों में आरक्षण। लेकिन अन्य देशों में आदिवासी महिलाओं का सामाजिक और राजनीतिक पहचान, विशेष रूप से अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका में, काफी कमजोर है, और उन्हें अपनी जातीय पहचान से ऊपर उठकर सामान्य राजनीतिक संरचनाओं में भागीदारी में कठिनाई होती है। इसके अलावा, आदिवासी महिलाओं के खिलाफ हिंसा और शोषण की घटनाएँ भारत में अपेक्षाकृत अधिक संवेदनशीलता के साथ उठाई जाती हैं, जबकि अन्य देशों में यह समस्याएँ कम ही उभर पाती हैं। भारत में आदिवासी महिलाओं की सुरक्षा के लिए कई विधायिका और संगठनों के प्रयास हैं, लेकिन वैश्विक स्तर पर इन मुद्दों पर व्यापक कानूनी और सामाजिक संरचनाओं का अभाव होता है।

इस प्रकार, भारत में आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए संवैधानिक प्रावधान और सरकारी योजनाओं का बेहतर ढांचा है, जबकि वैश्विक स्तर पर यह मुद्दा अधिक चुनौतीपूर्ण और कमजोर संरचनाओं के साथ उभरता है।

सशक्तिकरण के लिए उपाय और सिफारिशें (Measures and Recommendations for Empowerment)

1. शासन स्तर पर उपाय (Measures at the Governance Level)

आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए सबसे प्रभावी कदम शासन स्तर पर उठाए जा सकते हैं। सबसे पहला कदम यह है कि सरकारें आदिवासी महिलाओं के लिए विशेष योजनाओं और कार्यक्रमों का विस्तार करें, जो शिक्षा, स्वास्थ्य, और सामाजिक सुरक्षा जैसे बुनियादी अधिकारों को सुनिश्चित करें। भारत में, पंचायत राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण ने आदिवासी महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, लेकिन इसके प्रभावी क्रियान्वयन में और सुधार की आवश्यकता है। शासन स्तर पर, आदिवासी महिलाओं को मुख्यधारा में लाने के लिए पंचायतों में और अन्य लोक–निर्णय प्रक्रियाओं में उनकी भागीदारी को बढ़ावा दिया जा सकता है। सरकारें आदिवासी महिलाओं के लिए विशेष शिक्षा कार्यक्रम शुरू कर सकती हैं, जिससे वे राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक निर्णयों में सक्रिय भागीदार बन सकें। इसके अलावा, भूमि अधिकारों

की रक्षा के लिए ठोस नीति बनाई जानी चाहिए, जिससे आदिवासी महिलाओं को उनके पारंपरिक भूमि अधिकारों का संरक्षण मिल सके। स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, खासकर ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में, भी एक महत्वपूर्ण उपाय है। आदिवासी महिलाओं के लिए स्वास्थ्य के क्षेत्र में विशेष योजनाओं का निर्माण, जैसे मातृ–स्वास्थ्य सेवाएं और पोषण कार्यक्रम, उनके सशक्तिकरण में सहायक हो सकते हैं।

2. सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव (Social and Cultural Change)

आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए समाज और संस्कृति में बदलाव की आवश्यकता है। आदिवासी समुदायों में महिलाओं के पारंपरिक कर्तव्यों और भूमिकाओं को लेकर गहरी सामाजिक धारणाएँ बनी हुई हैं, जो उन्हें सार्वजनिक और राजनीतिक जीवन में पूरी तरह से भाग लेने से रोकती हैं। इन धारणाओं को बदलने के लिए जागरूकता अभियानों और शिक्षा के माध्यम से समाज में बदलाव लाया जा सकता है। आदिवासी महिलाओं के अधिकारों और उनके कर्तव्यों के बारे में समुदाय में संवाद स्थापित किया जाना चाहिए।

साथ ही, आदिवासी समाजों में लैंगिक भेदभाव और महिला विरोधी रवैयों के खिलाफ संघर्ष के लिए सामाजिक आंदोलन और कार्यक्रमों की आवश्यकता है। इन आंदोलनों में आदिवासी महिलाओं को सक्रिय रूप से शामिल किया जाना चाहिए, ताकि वे अपनी समस्याओं को समझ सकें और सामूहिक रूप से उन्हें हल करने के लिए प्रयास कर सकें। आदिवासी महिलाओं के नेतृत्व को प्रोत्साहित करने के लिए प्रशिक्षण और मार्गदर्शन कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता है। इसके माध्यम से वे अपनी आवाज को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर सकती हैं। सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव के लिए राज्य और समुदायों का सहयोग आवश्यक है, ताकि आदिवासी महिलाओं को उनकी पारंपरिक भूमिकाओं से बाहर निकलने और नई भूमिका निभाने का अवसर मिल सके।

3. वैश्विक सहयोग (Global Collaboration)

वैश्विक सहयोग आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। वैश्विक स्तर पर विभिन्न देशों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और गैर–सरकारी संस्थाओं को एकजुट होकर आदिवासी महिलाओं के अधिकारों की रक्षा और उनके सशक्तिकरण के लिए काम करना चाहिए। वैश्विक संगठनों जैसे संयुक्त राष्ट्र महिला और अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन पहले से आदिवासी महिलाओं के लिए कई कार्यक्रम चला रहे हैं, लेकिन इन प्रयासों में और अधिक तालमेल और संसाधनों की आवश्यकता है। इसके अलावा, आदिवासी महिलाओं को वैश्विक स्तर पर उनके पारंपरिक अधिकारों, जैसे भूमि अधिकारों और प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन, की रक्षा करने के लिए एक साझा वैश्विक मंच की आवश्यकता है। विभिन्न देशों में आदिवासी महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए समान नीति बनाने और एकजुट प्रयास करने की आवश्यकता है। इन कार्यक्रमों में आदिवासी महिलाओं को वैश्विक संगठनों और सरकारों द्वारा समर्थन मिल सकता है, जो उन्हें सामाजिक और राजनीतिक निर्णयों में भागीदारी की दिशा में मार्गदर्शन और अवसर प्रदान करेगा। वैश्विक सहयोग से आदिवासी महिलाओं को एक सामूहिक आवाज मिल सकती है, जिससे उनकी समस्याओं को व्यापक रूप से समझा जा सके और समाधान के लिए ठोस कदम उठाए जा सकें। यह सहयोग आदिवासी महिलाओं के लिए एक मजबूत कानूनी और राजनीतिक तंत्र तैयार करने में मदद कर सकता है, जो उनके सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा।

6. निष्कर्ष (Conclusion)

आदिवासी महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण पर हुए शोध से यह स्पष्ट होता है कि हालांकि आदिवासी महिलाएं सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक दृष्टिकोण से कई चुनौतियों का सामना करती हैं, फिर भी उनके सशक्तिकरण के लिए कई सकारात्मक कदम उठाए गए हैं। भारत में संवैधानिक अधिकारों, पंचायतों में आरक्षण, और सरकारी योजनाओं के माध्यम से आदिवासी

महिलाओं को राजनीतिक और सामाजिक जीवन में सक्रिय भागीदारी का अवसर मिला है। हालांकि, सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाओं के कारण इन अधिकारों का पूरी तरह से क्रियान्वयन नहीं हो पा रहा है। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी आदिवासी महिलाओं को समान समस्याओं का सामना करना पड़ता है, लेकिन कई देशों में सरकारें और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ उन्हें सशक्त बनाने के लिए सक्रिय रूप से काम कर रही हैं।

भारत में आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए किए गए प्रयासों की सफलता और असफलता, दोनों को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि राजनीतिक सशक्तिकरण केवल संविधान और कानून से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक बदलाव की भी आवश्यकता है। वैश्विक स्तर पर आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में कई ठोस कदम उठाए गए हैं, लेकिन इस प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाने के लिए एकजुट अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता है। आगे के शोध के लिए यह महत्वपूर्ण होगा कि आदिवासी महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण के प्रभावों का गहन अध्ययन किया जाए, विशेष रूप से उनके जीवन स्तर, स्वास्थ्य, शिक्षा और सामुदायिक विकास पर इसके प्रभाव को समझा जाए। साथ ही, यह भी आवश्यक है कि शोध इस पर केंद्रित हो कि आदिवासी महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए किस प्रकार के सांस्कृतिक बदलाव और सरकारी नीतियों की आवश्यकता है। इसके अलावा, वैश्विक और राष्ट्रीय स्तर पर आदिवासी महिलाओं की स्थिति को समझने के लिए तुलनात्मक अध्ययन किए जाएं, ताकि अधिक सटीक और प्रभावी समाधान निकाले जा सकें।

संदर्भ सूची :–(Reference)

1. Dube, S. C. (1991). *The Tribal World of Verghese Kurien*. Sage Publications, New Delhi.
2. Singh, K. S. (2001). *The Tribal Situation in India*. Manohar Publishers, New Delhi.
3. Chaudhuri, S. (2008). *Tribal Empowerment: A Political Perspective*. Oxford University Press, New Delhi.
4. Pinto, J. M. (2015). *Gender, Race and the Politics of Empowerment: A Study of Indigenous Women*. Routledge, London.
5. Bandyopadhyay, S. (2010). *Women and Political Participation in Tribal India*. Rawat Publications, Jaipur.
6. Ghosh, B. (2016). *Tribal Women and Empowerment in the Contemporary World*. Sage Publications, New Delhi.
7. Kumar, S. (2017). *Tribal Rights and Political Spheres in India*. Routledge, London.
8. Reddy, P. V. (2013). *Empowerment of Tribal Women in Rural India*. Cambridge University Press, New York.
9. Nirmal, R. (2012). *Adivasi Women and Sustainable Development in India*. Popular Prakashan, Mumbai.
10. Thapar, R. (2009). *Indigenous Women: From Rights to Empowerment*. Princeton University Press, New Jersey.
11. Sarkar, S. (2011). *Women in India's Tribal Communities: Political and Social Impacts*. Aryan Books International, New Delhi.
12. Bose, A. (2004). *Empowerment Through Panchayats: A Case Study of Tribal Women in India*. Manohar Publishers, New Delhi.
13. Sharma, R. (2018). *Political Empowerment of Women in Tribal India*. Sage Publications, New Delhi.
14. Patel, V. (2010). *Global Perspectives on the Empowerment of Indigenous Women*. International Book Distributors, Dehradun.
15. Agarwal, R. (2005). *Empowerment of Women in Tribal Areas: Challenges and Solutions*. Oxford University Press, New Delhi.